

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 14, आज इब्रानियों पर प्रचार के लिए मुख्य केंद्र बिंदु

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इस अंतिम सत्र में, हम हमारे पीढ़ी के ईसाइयों के लिए हिब्रू के लेखक की घोषणा के कई पहलुओं को देखेंगे और इस उपदेश ने हर पीढ़ी के ईसाइयों के लिए क्या घोषणा की है। जबकि आप मेरी टिप्पणी, दृढ़ता और कृतज्ञता, और मेरी हाल ही की पुस्तक, हिब्रू, अनुग्रह और कृतज्ञता में पूरे हिब्रू को उपदेश देने के लिए कई और विशिष्ट उपदेश विचार पा सकते हैं, मैं यहाँ केवल पाँच कीवर्ड पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जो हिब्रू के लेखक हमसे और हमारी मण्डलियों से बात करना जारी रखते हैं क्योंकि हम आज अपने भाइयों और बहनों को बुलाने का उनका कार्य करते हैं। यदि आप उसकी आवाज़ सुनते हैं, तो अपने दिलों को कठोर न करें।

पहला ऐसा शब्द है, जीवन की सर्वोच्च प्राथमिकता को नज़रअंदाज़ न करें। लेखक ने जिन ईसाइयों को संबोधित किया था, वे अपने पड़ोसियों से कई संदेश सुन रहे थे, जो उन्हें यीशु का अनुसरण करने में खुद को समर्पित करने से हतोत्साहित कर रहे थे। इस कोलाहल के बीच, लेखक अपने श्रोताओं को याद दिलाता है कि भगवान ने बात की थी।

यीशु में, परमेश्वर ने परमेश्वर कौन है, इसका सबसे पूर्ण रहस्योद्घाटन दिया। यीशु में, परमेश्वर के सभी पहले के रहस्योद्घाटन शानदार स्पष्टता और पूर्णता के साथ एक साथ आते हैं। यीशु में, परमेश्वर ने मृत्यु की सभी शक्तियों से मुक्ति और एक शानदार अनंत काल का वादा किया है।

ईश्वर की उपस्थिति में, यह एक ऐसा संदेश है जिसे हमारे जीवन में हर दूसरे संदेश से ऊपर रखा जाना चाहिए। उपदेशक के लिए हमारी पहली प्राथमिकता उस वचन का जवाब देना होगी जो ईश्वर ने बोला है और अभी भी बोलता है। यह एक ऐसा विषय है जो पूरे उपदेश में एक दोहराव की तरह चलता है।

पुत्र द्वारा बोले गए संदेश पर कोई कैसे प्रतिक्रिया करता है, परमेश्वर की आवाज़ सुनते समय कोई अपना हृदय कठोर करता है या नहीं, परमेश्वर के अच्छे वचन ने उपयुक्त प्रतिक्रिया उत्पन्न की है या नहीं। ये इस लेखक के लिए जीवन और मृत्यु, अनन्त न्याय और अनंत काल के लिए उद्धार के मामले हैं। उपदेशक ने ईसाई विश्वदृष्टि की बुनियादी रूपरेखा को सुदृढ़ करना आवश्यक पाया, जो इसे सर्वोच्च प्राथमिकता बनाता है।

और हमें भी ऐसा ही करना होगा, अगर उसी तरह नहीं तो कुछ ऐसे बदलाव करने होंगे जो हमारी मण्डली की संस्कृति के भीतर सार्थक हों। जो कुछ भी दिखाई देता है वह एक अस्थायी वास्तविकता है। भौतिक आकाश और पृथ्वी का कोई भविष्य नहीं है, लेकिन वे उस महान दिन पर हिल जाएंगे और हटा दिए जाएंगे जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है।

दृश्यमान पृथ्वी और स्वर्ग से परे एक श्रेष्ठ शाश्वत क्षेत्र है, स्वर्ग ही, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने कहा है। यह वह क्षेत्र है जिसमें परमेश्वर की पूर्ण उपस्थिति का आनंद स्वर्गदूतों की सेना और

महिमावान मसीह द्वारा लिया जाता है। हमारे दृष्टिकोण से, यह आने वाला क्षेत्र है, इस अर्थ में नहीं कि यह पहले से मौजूद नहीं है, बल्कि इस अर्थ में कि इसे अभी तक मनुष्यों के सामने प्रकट नहीं किया गया है और हमें इसका अनुभव नहीं हुआ है।

क्योंकि परमेश्वर का राज्य ही शाश्वत है, इसलिए उससे जुड़ी हर चीज़ बेहतर है। वहाँ हमें बेहतर और स्थायी संपत्ति मिलेगी।

हम एक बेहतर मातृभूमि पाएंगे क्योंकि एक स्वर्गीय मातृभूमि और एक अडिग राज्य जिसमें हमारा स्थायी शहर बसता है। यह परमेश्वर के विश्राम का स्थान है जिसमें परमेश्वर ने हमें आमंत्रित किया है और जिसके लिए सूर्य ने हमें शुद्ध किया है। इब्रानियों के लेखक ने हमसे आग्रह किया है कि हम यहाँ रहें ताकि वहाँ हमारा स्वागत हो।

अगर हम इस वादे को गंभीरता से लें, तो हमें 17वीं सदी के कवि और उपदेशक जॉन डॉन से सहमत होना चाहिए, जिन्होंने कहा था कि इस जीवन का हर मिनट अगले लाखों वर्षों पर निर्भर करता है। और इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम रास्ते में रुकें नहीं, और कम सुखों और लक्ष्यों के लिए अपनी ईमानदारी और ईश्वर के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं को न छोड़ें। हममें से कई लोगों के लिए खतरा यह नहीं है कि हम मसीह को स्वीकार करने में विफल हो जाएँ।

बल्कि, इब्रानियों के कुछ प्रथम पाठकों के लिए, खतरा यह है कि हम अपनी चिंता का केंद्र पाएँगे और इसलिए, हमारी प्राथमिकताएँ इस अस्थायी क्षेत्र में हमारी स्थिति पर वापस आ जाएँगी। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे शिष्यों को परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को अपने जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता बनाने से विचलित किया जा सकता है। संबोधित लोगों की स्थिति दुनिया भर के कई ईसाइयों की स्थिति से बहुत सीधे जुड़ती है, जिनका संघर्ष वास्तव में खून-खराबे की हद तक हो चुका है और होने का खतरा है।

अपमान, दुर्व्यवहार, आर्थिक अभाव, धमकी, यातना और यहां तक कि फांसी के माध्यम से, कई समाज शिष्यों को स्वतंत्रता, परिवार और यहां तक कि जीवन को बनाए रखने की इच्छा के साथ ईश्वर के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बदलने का प्रयास करते हैं। हालाँकि पश्चिमी दुनिया में हम में से कई लोगों को उत्पीड़न का सामना नहीं करना पड़ता है, फिर भी हम नियमित रूप से एक भोजन के लिए अपने जन्मसिद्ध अधिकार को बेचने के लिए लुभाए जाते हैं, जैसे कि एसाव, जबकि हम पृथ्वी पर खजाने जमा करने के लिए अपना पहला और सबसे अच्छा प्रयास करते हैं। ईश्वर के साथ अपने रिश्ते को बढ़ाने, ईश्वर के नाम पर सार्थक सेवा में खुद को निवेश करने और अपने स्वयं के प्राकृतिक बच्चों सहित युवा विश्वासियों को अनुशासित करने से कितना समय, ऊर्जा और संसाधन बर्बाद हो जाते हैं, ताकि जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए बेहतर और उच्च-स्थिति वाले उत्पाद प्राप्त किए जा सकें, जिसे मीडिया द्वारा प्रचारित किया जाता है और सांसारिक सोच वाले पड़ोसियों और दोस्तों द्वारा मजबूत किया जाता है, या काम पर पदोन्नति के लिए? हम कितनी बार खुद को उन गतिविधियों और चिंताओं से विचलित पाते हैं जिनका हमारे मसीह जैसा बनने में कोई योगदान नहीं है, जो दूसरों के जीवन में सार्थक रूप से योगदान करने का कोई अवसर प्रदान नहीं करते हैं? इब्रानियों का उपदेशक हमें हर मोड़ पर याद दिलाता है

कि ऐसी सभी वस्तुएं अस्थायी क्षेत्र की हैं, एक ऐसे संसार की हैं जो स्थायी नहीं है, बल्कि उन सभी के साथ हिलने के लिए नियत है जिन्होंने अपने जीवन को इस पर आधारित किया है।

हमें चेतावनी के संकेत दिए गए हैं। हमें वैश्विक बाजारों और राजनीतिक व्यवस्थाओं की अस्थिरता में यह देखना चाहिए कि किस तरह से अशांत शांति पूर्ण संघर्ष में बदल जाती है, मानव अनुभव अपराध और प्राकृतिक आपदा के अधीन हो जाता है। ये सभी बुनियादी अस्थिरता और सभी सांसारिक चीजों की अविश्वसनीयता के संकेत हैं।

इब्रानियों के उपदेशक हमें इस वास्तविकता पर लंबे समय तक और गहराई से देखने और यह समझने के लिए आमंत्रित करते हैं कि यह यीशु की मित्रता और कार्यों की खोज है जो हमें परमेश्वर की दृष्टि में सम्मान दिलाएगी, जो शायद विडंबना यह है कि अकेले ही इस दृश्यमान, अस्थिर दुनिया में भी सुरक्षा प्रदान करती है। फिर से, हम पुत्र द्वारा बोले गए वचन का ईमानदारी से जवाब देने के महत्व पर लौटते हैं। जैसा कि यीशु ने खुद मैथ्यू में पहाड़ी उपदेश के अंत में कहा था, वे सभी जो मेरे इन शब्दों को सुनते हैं और उन्हें करते हैं, उनकी तुलना एक समझदार व्यक्ति से की जाएगी जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया था।

इब्रानियों में विश्वास से जीने का यही अर्थ है। यहाँ विश्वास का मतलब केवल विश्वासों से नहीं है, बल्कि हमारे दैनिक जीवन में एक व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने से है जो अदृश्य वास्तविकताओं और भविष्य की वास्तविकताओं को हमारे सभी विचार-विमर्श के लिए दिशासूचक के रूप में देखता है। विश्वास इस तरह कार्य करता है मानो परमेश्वर के सभी वादे सत्य और विश्वसनीय हैं।

विश्वास हमेशा जीवन को इस उद्देश्य से व्यवस्थित करता है कि परमेश्वर को प्रसन्न किया जाए और परमेश्वर ने जो विरासत देने का वादा किया है, उसे पाने के लिए आगे बढ़ा जाए, न कि दुनिया द्वारा अपने भक्तों को दी जाने वाली उथली मजदूरी से संतुष्ट हुआ जाए। विश्वास इस दुनिया की परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करता है, ताकि भविष्य में परमेश्वर के हस्तक्षेप और परमेश्वर के वादों की प्राप्ति के साथ-साथ इस दुनिया से परे अदृश्य वास्तविकताओं को भी ध्यान में रखा जा सके। इब्रानियों 11 के नायकों की प्राथमिकताएँ स्पष्ट थीं, और उनके उदाहरण हमारे और हमारी मण्डलियों के सामने मार्ग को रोशन करते रहते हैं।

कलीसियाओं से कहा, वह है कि मसीह में जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे मत भूलो। हमारे पास एक महान महायाजक है जो स्वर्ग से होकर आया है। हमारे पास आत्मा के लिए एक लंगर है।

हमारे पास एक वेदी है। उपदेशक एक परेशान मण्डली के सामने सिर्फ एक गाजर नहीं रख रहा है, ताकि उन्हें अनंत क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जा सके। वह उस भरपूर खजाने की ओर भी इशारा कर रहा है, जिसे वे अपनी यात्रा में अपने साथ लेकर चलते हैं।

उन्हें हमेशा परमेश्वर की पूर्ण उपस्थिति में प्रवेश के लिए भूखा रहना चाहिए, लेकिन वे निश्चित रूप से कुपोषित या मार्ग में बेहोश नहीं होते हैं। मसीह में विश्वासियों के पास पहले से क्या है और शायद विश्वासियों को अपने जीवन में पूर्ण प्रभाव डालने की अनुमति देनी चाहिए, इस उपदेश में विश्वासयोग्यता को सुविधाजनक बनाने और हर युग में शिष्यों को याद दिलाने के लिए एक

महत्वपूर्ण रणनीति है कि क्यों परमेश्वर के प्रति एक वफादार और आज्ञाकारी प्रतिक्रिया को दृढ़ता से थामे रहना सबसे पुरस्कृत करने वाला कार्य है। हमारे पास अपनी आत्मा के लिए एक लंगर है।

इब्रानियों 6:19, और 20. मनुष्य की सबसे बुनियादी ज़रूरतों में से एक है सुरक्षा और स्थिरता। जब हम जानते हैं कि हम अपने जीवन को सुरक्षित रूप से बना सकते हैं, तभी हम वास्तव में उस जीवन को बनाने के काम में लग सकते हैं।

उपदेशक ने घोषणा की कि यीशु में हमारे पास पूर्ण सुरक्षा और पूर्ण स्थिरता है क्योंकि, जैसा कि वह 13:8 में कहते हैं, यीशु मसीह कल और आज और हमेशा एक ही है। उपदेश की शुरुआत में, उपदेशक ने घोषणा की कि पृथ्वी और आकाश नष्ट हो जाएँगे, लेकिन आप बने रहेंगे। वे बदल जाएँगे, लेकिन आप वही हैं।

इस प्रकार लेखक ने अपने उपदेश को भरोसे के लिए विश्वसनीय आधार के बीच अंतर के साथ प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है जिस पर किसी का जीवन बनाया जा सकता है और अविश्वसनीय आधार जो उन लोगों के लिए नुकसान का कारण बनता है जो उन पर निर्माण करते हैं। इन दोनों ग्रंथों, 1:12 और 13:8 में समानता का अर्थ स्थिरता है। यह परिवर्तनशीलता और अविश्वसनीयता के विपरीत है।

पहली सदी के अंत और दूसरी सदी की शुरुआत के एक रोमन वक्ता, डियो क्रिसोस्टोम, अविश्वास के बारे में अपने भाषण के संदर्भ में एक बहुत ही उपयोगी तुलनात्मक पाठ प्रदान करते हैं, जिसमें शिकायत की गई है कि मनुष्यों के साथ, कोई स्थिरता या सच्चाई नहीं है। डियो लिखते हैं कि किसी ने भाग्य के बारे में जो कहा है, वह मनुष्यों के बारे में भी कहा जा सकता है, यानी कि कोई भी किसी के बारे में नहीं जानता कि वह कल तक वैसा ही रहेगा या नहीं। लोग एक-दूसरे से किए गए वादों को तोड़ देते हैं और एक-दूसरे को अलग-अलग सलाह देते हैं और एक रास्ते को उचित मानते हुए, दूसरे रास्ते पर चलते हैं।

इब्रानियों का उपदेशक अपने पाठकों को यह बताना चाहता है कि वे यीशु पर भरोसा कर सकते हैं। यीशु का अनुग्रह आज नहीं है और कल नहीं चला जाएगा, जैसे अविश्वसनीय लोगों का अनुग्रह होता है। बल्कि, उसका अनुग्रह हमेशा अपने वफादार लोगों के प्रति मौजूद रहता है, और यह विश्वासियों के दिलों के लिए स्थिरता का स्रोत बन जाता है।

जिसने वादा किया है वह वाकई वफादार या भरोसेमंद है। वास्तव में, यीशु ज़्यादा भरोसेमंद साबित होंगे, पूरी सृष्टि में किसी भी चीज़ से ज़्यादा उनकी आशा के लिए एक ज़्यादा स्थिर लंगर। हम नियमित रूप से ऐसे सबूत देखते हैं जो इस दुनिया की चीज़ों की अविश्वसनीयता के बारे में लेखक के संदेह का समर्थन करते हैं।

इस सदी में हमने अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव देखा है, कभी-कभी निवेशकों को खुशी होती है, तो कभी-कभी घबराहट होती है। आतंकवादियों ने हमें सिखाया है कि हम कितने कमजोर हैं। जीवन अपने आप में नाजुक है।

एक तूफ़ान सैकड़ों परिवारों की ज़िंदगी को तहस-नहस कर सकता है। सुरक्षा, एक भरोसेमंद नींव, आत्मा के लिए एक लंगर। अच्छी खबर यह है कि यीशु हमारे लिए ये सभी चीज़ें अभी और हमेशा के लिए रहेंगे।

यीशु की शिक्षाओं को गंभीरता से लेना और उनके इर्द-गिर्द अपने जीवन का निर्माण करना हमें उन जीवनो के लिए एक अडिग आधार प्रदान करता है। एपिस्कोपल चर्च द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली सामान्य प्रार्थना की पुस्तक में, लेंट के पांचवें रविवार के लिए एक प्रार्थना है जिसमें एक मण्डली इस याचिका को प्रार्थना करती है। अपने लोगों को वह प्यार करने दें जो आप आदेश देते हैं और जो आप वादा करते हैं उसे चाहते हैं ताकि दुनिया के तेज़ और विविध परिवर्तनों के बीच, हमारे दिल निश्चित रूप से वहीं टिके रहें जहाँ सच्ची खुशियाँ मिलती हैं।

यीशु एक परम विश्वसनीय आधार है, और वह हमारे लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर चुका है, ताकि वह हमारे लिए लंगर बन सके और हमारे हृदय को उस स्थान पर स्थिर कर सके जहाँ सच्ची खुशियाँ पाई जा सकती हैं। हमें वह सभी सहायता भी प्राप्त है जिसकी हमें आवश्यकता है। इब्रानियों के उपदेशक ने अपनी मण्डली को प्रोत्साहित किया कि परमेश्वर उन्हें अपने स्वयं के जंगल के अनुभवों के माध्यम से बनाए रखने में सक्षम है और उन्हें दुनिया की शत्रुता का सामना करने के लिए जीतने के लिए तैयार करने में सक्षम है।

वे अपने संघर्ष में अकेले नहीं हैं। उनके पास अपने संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए केवल एक कठोर ऊपरी होंठ और व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से कहीं अधिक है। उनके पास सभी संसाधनों और सहायता तक पहुँच है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर उन्हें प्रदान कर सकता है।

आध्यात्मिक शक्ति, आश्वासन और सांत्वना के आंतरिक संसाधन। ईश्वर द्वारा ईश्वर के उपहारों को जुटाने के जवाब में उनके साथी विश्वासियों द्वारा दी गई भौतिक सहायता, प्रेमपूर्ण देखभाल और प्रोत्साहन के बाहरी संसाधन। विश्वास के लिए कोई चुनौती इतनी बड़ी नहीं है कि ईश्वर उन लोगों को सहन करने और दृढ़ रहने के साधन प्रदान न कर सके जो निराशा में पीछे हटने के बजाय मदद के लिए ईश्वर के पास आते हैं।

प्रार्थना, व्यक्तिगत और सामूहिक, एक आध्यात्मिक अनुशासन है जिसकी शक्ति और महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। परमेश्वर के सामने आने और समय पर मदद के लिए अनुग्रह मांगने का अधिकार यीशु द्वारा हमारे लिए जीते गए सबसे मूल्यवान लाभों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यीशु हमारे आश्वासन का स्रोत भी है कि परमेश्वर हमें वह सहायता देगा जिसकी हमें आवश्यकता है।

यीशु को महायाजक के रूप में स्थापित करना, इब्रानियों का एक प्रमुख विषय है, जो हमारे प्रति यीशु की निरंतर प्रतिबद्धता और हमारे साथ संबंध को व्यक्त करता है, हमेशा हमारी ओर से मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है, जैसा कि उपदेशक अध्याय 7, श्लोक 25 में कहते हैं। यीशु परमेश्वर और परमेश्वर की सहायता तक हमारी पहुँच को खुला और सुरक्षित रखने के लिए जीवित रहते हैं। जब हम कठिन विकल्पों का सामना करते हैं जो परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की परीक्षा लेते हैं या जब हम खुद को अपनी कमज़ोरी के कारण धोखा खाते हुए पाते

हैं, तो हमें यह आश्वासन मिलता है कि यीशु निंदा करने वाली नज़र के बजाय सहानुभूति के साथ हमारे साथ खड़े हैं।

हमें यह आश्वासन है कि यीशु, जिसने उन्हीं संघर्षों को जाना है और विजय का मार्ग पाया है, हमें चुनौती देने वाली परीक्षाओं और प्रलोभनों का सामना करने में वफ़ादार बने रहने में मदद करने के लिए तैयार है। इसलिए, जैसा कि लेखक आग्रह करता है, जब भी ये चुनौतियाँ सामने आती हैं, तो हमें अनुग्रह के सिंहासन की ओर दौड़ना चाहिए और आत्मविश्वास से किसी ऐसे व्यक्ति की मदद माँगनी चाहिए जिसने हमारी ओर से इन प्रलोभनों और चुनौतियों पर विजय प्राप्त की हो। हमारे पास एक पवित्र पुरोहिती बुलाहट की गरिमा और सम्मान भी है।

उपदेशक हमें यह याद दिलाने में मदद करता है कि यह कितना आश्चर्यजनक विशेषाधिकार है कि हम किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, किसी भी स्थिति में परमेश्वर के समक्ष आराधना और प्रार्थना में आ सकते हैं, ठीक इसलिए क्योंकि यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ पर रहते हैं और हमारे लिए मध्यस्थता करते हुए रहते हैं। ईसाई आराधना कोई काम नहीं है, बल्कि यीशु द्वारा हमें दिए गए सम्मान और गरिमा के निर्वहन का हिस्सा है, जिन्होंने हमारे लिए मंदिर और तम्बू के केवल लेवी पुजारियों के लिए औपचारिक रूप से आरक्षित विशेषाधिकारों को खोल दिया है। आराधना और प्रार्थना भी, वास्तव में, अडिग क्षेत्र और परमेश्वर की पूर्ण, अप्रत्यक्ष उपस्थिति में हमारे अंतिम प्रवेश का पूर्वानुभव बन जाती है।

यह हमारी प्रार्थना और आराधना के समय को केन्द्रित करता है, न केवल एक ऐसे स्थान के रूप में जहाँ हम दैनिक जीवन के लिए शक्ति पा सकते हैं या सांसारिक आवश्यकताओं के लिए समाधान पा सकते हैं, बल्कि एक ऐसे द्वार के रूप में भी जहाँ से हम अपनी यात्रा के अंत को देखना और उसका अनुभव करना शुरू कर सकते हैं। यीशु द्वारा अपने स्वयं के रक्त द्वारा पूरे लोगों का अभिषेक करने से धर्म, प्रार्थना, मध्यस्थता, आराधना, गवाही, मुलाकात और प्रचार-प्रसार को मंत्रालय के पेशेवरों पर छोड़ने का भी अंत हो जाता है। कई मण्डलियाँ उन रेखाओं की पुष्टि करने में आराम की तलाश कर सकती हैं जो पुजारियों को आम लोगों से अलग करती हैं, खुद को उस बुलावे से मुक्त करती हैं जो यीशु ने उन्हें दिया है।

लेकिन अगर पुराने नियम के अधिकारों के तहत परमेश्वर और पवित्र स्थानों तक पहुँच की सीमा एक अपूर्ण स्थिति थी जिसे यीशु ने इतनी कीमत पर पार किया, तो हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम, नए नियम के लोगों के रूप में, सांसारिक पवित्र स्थान, पुराने नियम के मंदिर और तम्बू के पैटर्न के अनुसार अपने धार्मिक जीवन को न बनाएँ। इस पाठ में सुसमाचार का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि प्रत्येक विश्वासी, न केवल पूर्णकालिक सेवकाई के लिए अलग रखे गए मसीहियों को, किसी भी समय परमेश्वर के सामने आने का अद्वितीय सम्मान दिया गया है और उस सेवा को करने का सम्मान दिया गया है जिसे परमेश्वर ने उसके लिए नियुक्त किया है। प्रत्येक मसीही का पूरा जीवन गवाही, आराधना और प्रेम और साझा करने के कार्यों के माध्यम से परमेश्वर की सेवा के लिए पवित्र के रूप में अलग रखा जा सकता है।

ये वे सुखद बलिदान हैं जिन्हें हम में से हर एक को इब्रानियों 13, आयत 15 और 16 में इस उपदेश के अंत में परमेश्वर के सामने चढ़ाने के लिए बुलाया गया है। तीसरा वचन जो इब्रानियों में

हमेशा कहा जाता है, वह यह है: परमेश्वर को जो मिलना चाहिए, उसे नज़रअंदाज़ मत करो। हम आम तौर पर स्वार्थी लोग होते हैं।

हम इस बारे में बहुत सोचते हैं कि हमें क्या मिलना चाहिए, हमें क्या चाहिए। स्वार्थ के प्रति यह सहज झुकाव ही पाप करने की हमारी प्रवृत्ति की जड़ है, दोहरे मन की जड़ है जो हमें अपने शिष्यत्व में लंगड़ा कर चलने पर मजबूर करती है, बजाय इसके कि हम दृढ़ता के साथ दौड़ें, हर बोझ, हर बाधा को दूर रखें जो हमें धीमा कर सकती है। और इसलिए, इब्रानियों के उपदेशक ने अपना दो-भाग का उपाय प्रस्तुत किया है।

उन सभी चीज़ों के बारे में जो हम चाहते हैं, जिनकी खोज हमें मसीह के समान बनने और परमेश्वर के साथ घर में रहने की हमारी दौड़ में प्रगति से दूर ले जाती है, उपदेशक हमें उन सभी चीज़ों की याद दिलाता है जो हमारे पास पहले से ही हैं। हमने अपने पिछले भाग में पहले ही इस पर चर्चा कर ली है। अपने हक़ को पाने, आत्म-संतुष्टि और आत्म-पूर्ति के बारे में हमारी चिंता के बारे में, या यहाँ तक कि हमारे आस-पास के लोगों को संतुष्ट करने के बारे में जिनकी स्वीकृति और स्वीकृति हम चाहते हैं, उपदेशक हमें यह भी याद दिलाता है कि परमेश्वर को क्या मिलना चाहिए और हमें इसे अपने दिमाग में सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अपनी आँखों के सामने रखने के लिए कहता है।

इब्रानियों में उन सभी बातों का प्रतिरूप है जो हमारे पास हैं, जिनका हमने अभी-अभी अन्वेषण किया है, वह है हमारे पास होने दो। आइए हम कृतज्ञता रखें। इब्रानियों 12 पद 28।

जैसे-जैसे हम अधिक जागरूक होते जाते हैं और अपने साथी विश्वासियों को इस बात के प्रति अधिक जागरूक होने में मदद करते हैं कि परमेश्वर ने मसीह में हम पर कितनी अद्भुत उदारता बरसाई है, सूर्य में बोले गए वचन के प्रति उस उदारता को उचित रूप से महत्व देने और उसका जवाब देने की गंभीरता के बारे में हमारी जागरूकता भी बढ़ती जाती है। धर्मशास्त्र और नैतिकता, विश्वास और प्रतिक्रिया, पंथ और ईसाई जीवन को एक साथ रखा गया है और मसीह द्वारा शुरू किए गए अनुग्रह संबंध के बारे में लेखक के शब्दों में परस्पर ऊर्जा दी गई है और शिष्य के दायित्व के बारे में कि वह इस संबंध को इतना महत्व दे कि मसीह में परमेश्वर के प्रति वफ़ादार और आज्ञाकारी बने रहने के लिए जो भी कीमत चुकानी पड़े, वह सब करे। अनुग्रह और प्रतिक्रिया के बीच का संबंध धर्मशास्त्र और नैतिकता के बीच का जोड़, जोड़ है।

लेखक नैतिक चुनाव करने के संदर्भ के रूप में ईश्वर की उदारता और दयालुता के अनुभव का आह्वान करता है। जबकि हमारे लेखक के मन में मण्डली के सामने एक विशेष चुनौती है, उनके उपदेश की प्रामाणिक स्थिति सभी स्थितियों में शिष्यों के सामने प्रश्न रखती है। इस स्थिति में कार्रवाई का कौन सा तरीका है जो ईश्वर द्वारा मुझ पर दिखाए गए अनुग्रह के लिए मेरी प्रशंसा को पूरी तरह से प्रमाणित करेगा और ईश्वर को वह प्रतिफल प्रदान करेगा जो उसे सबसे अधिक प्रसन्न करेगा, जो मेरे उद्धार में निहित उद्देश्यों के अनुरूप होगा? इस रिश्ते पर आधे-अधूरे ध्यान के साथ, जबकि हम अपने जीवन को अस्थायी सुखों और वस्तुओं में झोंक देते हैं, हमारे महान उपकारकर्ता के लिए उतना ही अपमानजनक है जितना कि खुला धर्मत्याग होगा और, इस प्रकार, हर तरह से उतना ही खतरनाक होगा।

अनुग्रह और प्रतिक्रिया के बीच यह संबंध ईश्वर के प्रति प्रेम और पड़ोसी के प्रति प्रेम के बीच का जोड़, कड़ी भी है क्योंकि इब्रानियों के लेखक ने कृतज्ञता के इस प्रवाह को अपने साथी विश्वासियों के प्रति प्रेम और सेवा के कार्यों की ओर निर्देशित किया है। ईश्वर को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, और इसलिए ईश्वर के हमारे लिए लाभ हमें उन लोगों के प्रति कृतज्ञता के फल देने के लिए कहते हैं जिन्हें ईश्वर ने नियुक्त किया है, जैसा कि अध्याय 6, श्लोक 7 और 8 में लेखक के सादृश्य में है, जैसे कि ऊपर से बारिश दी जाती है ताकि भूमि किसानों और भूमि पर निर्भर अन्य लोगों के लिए वनस्पति पैदा करे, न कि वर्षा देने वाले के लिए। वास्तव में, यदि हम ईश्वर के साथ अपनी स्थिति के बारे में आश्वासन चाहते हैं, तो इब्रानियों का उपदेशक हमें एक दूसरे में हमारे निवेश की ओर निर्देशित करता है।

इब्रानियों 6 पद 10 में, यह आपका काम और आपका प्यार है जो आपने परमेश्वर के नाम पर दिखाया है और संतों की सेवा करना जारी रखा है जिसे न्यायी परमेश्वर नहीं भूलेगा, जिससे लेखक को कम से कम यह आश्वासन मिलता है कि उद्धार को बनाए रखने वाली बेहतर चीज़ें उसकी अपनी मण्डली का भाग्य होंगी। इन पहली सदी के शब्दों में अनुग्रह के बारे में बात करना हमारे धार्मिक सामान के साथ खेलवाड़ करता है, विशेष रूप से विश्वास से बचाए जाने बनाम कार्यों से बचाए जाने या अनुग्रह से बचाए जाने बनाम कार्यों के बड़े आकार के बैग के साथ। मुफ्त अनुग्रह का मतलब यह नहीं है कि हम परमेश्वर से प्राप्त उपहारों का दिल से, वाणी से और परमेश्वर की उदारता और परमेश्वर के उपहारों के मूल्य के अनुरूप कृतज्ञता के कार्यों के साथ जवाब न दें।

जब हम इब्रानियों में अनुग्रह का प्रचार करते हैं, तो हम खुद को और अपनी मंडलियों को उस एकता, सुंदरता, नृत्य की तरलता को समझने के लिए मजबूर करते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारे साथ शुरू किया है और जिसके माध्यम से परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति, विश्वास के प्रत्येक समुदाय और अंततः पूरे ब्रह्मांड को बदलना चाहता है। पूरे नए नियम में अनुग्रह और प्रतिक्रिया पर जोर औचित्य और पवित्रता, विश्वास और शिष्यत्व को एक साथ जोड़ता है। इस विषय पर प्रेरित पौलुस के सूत्रीकरण काफी स्पष्ट और मांग वाले हैं।

2 कुरिन्थियों 5:15 में, वह लिखते हैं, मसीह सभी के लिए मरा ताकि जो जीवित रहते हैं वे अब अपने लिए नहीं बल्कि उसके लिए जीएँ जो उनके लिए मरा और जी उठा। पौलुस का जुनून स्पष्ट रूप से प्रेम के लिए प्रेम, जीवन के लिए जीवन की प्रतिक्रिया को उत्तेजित करना था, जो यीशु और उसकी आत्म-समर्पण मृत्यु में प्रकट ईश्वर की कृपा के लिए था। यीशु की शिक्षाओं और प्रेरितों की चेतावनियों और मसीह की समानता में परिवर्तन का आज्ञाकारिता का जीवन, संक्षेप में, अच्छे फल लाने का जीवन, ईश्वर का अनुग्रह जीतने के लिए नहीं दिया जाता है, बल्कि ईश्वर के अनुग्रह के लिए एक आभारी प्रतिक्रिया के रूप में दिया जाना चाहिए।

अनुग्रह और प्रतिक्रिया पर ध्यान केंद्रित करने से अंततः इस बात की पूरी समझ प्राप्त होती है कि अनुग्रह द्वारा बचाए जाने और न्यायोचित ठहराए जाने का क्या अर्थ है। जब हम परमेश्वर के अनुग्रह और उपहारों को अपने अंदर अपना पूर्ण प्रभाव डालने देते हैं, एक आभारी, परमेश्वर-निर्देशित प्रतिक्रिया को उत्तेजित करते हैं, तो हमारा जीवन अंदर से बाहर की ओर बदल जाता है

क्योंकि हम स्वयं की पूर्ति की तलाश करने की तुलना में परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता से अधिक से अधिक निर्देशित होते हैं। जब परमेश्वर का अनुग्रह हमारे साथ अपना पूरा मार्ग बना लेता है, तो हम परमेश्वर और मेरे के सामने खड़े होंगे, जो भीतर से मसीह के अस्तित्व को दर्शाता है, स्वामी को चढ़ाने के लिए फल से भरा हुआ है और जिसके बारे में उसकी दयालु प्रशंसा प्राप्त करना है।

हमारे भटके हुए दिलों को बार-बार ईश्वर के बताए मार्ग पर चलने से स्थिर बनाया गया है, क्योंकि हम ईश्वर के लाभों और उन उपहारों से उत्पन्न होने वाली ईमानदारी और निष्ठा के बारे में सोचते हैं। यही वह है जिसका अर्थ है हृदय को अनुग्रह द्वारा सुरक्षित या दृढ़ बनाया जाना, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने अध्याय 13, पद 9 में घोषित किया है। इब्रानियों के लेखक, जर्मन धर्मशास्त्री डिट्रिच बोनहोफर की तरह, सस्ते अनुग्रह या, शायद बेहतर, सस्ते आभार का प्रचार करने से एलर्जी रखते हैं। इस तरह से प्रचार करने से हमारी मंडलियों को कोई अच्छी सेवा नहीं मिलती है।

इब्रानियों का प्रचार हमें चुनौती देता है कि हम अपनी मंडलियों को अपनी सेवा और आज्ञाकारिता के साथ ईश्वर के प्रति सम्मानजनक तरीके से प्रतिक्रिया करने के अवसर प्रदान करें, कृतज्ञता के प्रति आभार व्यक्त करके वास्तव में कृतज्ञता के उत्कृष्ट दृष्टिकोण को जानें, और कुलीनता, आत्म-सम्मान, ईसाई अखंडता की भावना की खोज करें जो ईश्वर की उदारता का पूरे दिल से जवाब देने से आ सकती है। ईश्वर के प्रति इस कृतज्ञता को अपने भीतर बढ़ने देना, इस कृतज्ञता को अपने जीवन को आकार देने देना, हम जो कुछ भी करते हैं और जो कुछ भी अनुभव करते हैं, उसमें एकीकरण लाने का वादा करता है। हमारे जीवन के सभी हिस्से अनुग्रह के उस सुंदर चक्र नृत्य के प्रतिबिंब में एक साथ आते हैं जब हम ईश्वर से प्राप्त करने और अपनी श्रद्धा और सेवा के माध्यम से ईश्वर को धन्यवाद देने और ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है उसे एक दूसरे के साथ साझा करने की जागरूकता में चलते हैं।

और चौथा वचन जिसे इब्रानियों के लेखक ने हमें अनदेखा नहीं करने के लिए कहा है, बल्कि जिस पर पूरी तरह ध्यान देने के लिए कहा है, वह यह है कि एक दूसरे को नज़रअंदाज़ न करें। यह वचन हमें एक और महत्वपूर्ण संसाधन की ओर ले जाता है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है ताकि हम दृढ़ता के साथ दौड़ सकें और अपने लक्ष्य तक पहुँच सकें, और वह संसाधन एक दूसरे हैं। इब्रानियों के लेखक को पता था कि हमारे लिए एक दूसरे में खुद को निवेश करना कितना महत्वपूर्ण है, जिससे चर्च समर्थन, प्रोत्साहन और जवाबदेही का समुदाय बन सके।

केवल इसी तरह से हमें शिष्यों के रूप में परिपक्व होने के लिए आवश्यक समर्थन मिलेगा। हम सभी और हमारी मण्डली के सभी लोग मसीह के साथ भागीदार हैं और स्वर्गीय बुलाहट में भागीदार हैं, एक दूसरे की भागीदार के रूप में देखभाल करने और एक साथ आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करने की चुनौती दी गई है। हमें न केवल अपने दिलों में अविश्वास के प्रवेश के खिलाफ सावधान रहना है, बल्कि यह भी ध्यान रखना है कि कहीं अविश्वास हमारे साथी शिष्यों के दिलों में प्रवेश न कर जाए, जैसा कि अध्याय तीन, श्लोक 12 में बताया गया है।

हम सभी को डरने के लिए कहा गया है कि कहीं हम में से कोई भी यह न सोचे कि अध्याय चार, पद एक में परमेश्वर के वादा किए गए लक्ष्य से पीछे रह जाना सही है। हम सभी को यह सुनिश्चित

करने के लिए काम करना है कि हमारे हर एक भाई और बहन अपने दिलों को उस इनाम पर टिकाए रखें जो वफादार आज्ञाकारिता को दिया जाता है ताकि कोई भी इब्रानियों 12:15 में परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए। हमारे पड़ोसियों से दूसरे संदेशों की बाढ़ के खिलाफ, हमें मसीह के मार्ग के प्रति एक-दूसरे की प्रतिबद्धता को मजबूत करना है, प्यार और साझा करने के कार्यों के साथ एक-दूसरे का समर्थन करना है।

हम परिवार के लाभ और ज़िम्मेदारियाँ दोनों ही प्राप्त करते हैं, पूर्णता के मार्ग पर एक दूसरे के प्रोत्साहन, समर्थन और सहायता के कारण, यहाँ तक कि हमें अपने साथी शिष्यों से भी यह प्रोत्साहन, समर्थन और सहायता हमारी ज़रूरत और असफलता के समय मिलती है। उपदेशक आधुनिक सांस्कृतिक झूठ को चुनौती देता है कि धर्म एक निजी मामला है। हमारे आध्यात्मिक संघर्ष मसीह में हमारे बहनों और भाइयों का मामला है, और बदले में, हम उन्हें प्रोत्साहन, चेतावनी और समर्थन के अपने उपहार देने का एहसान मानते हैं।

अगर हमें अपनी आँखें और मन उस जगह स्थिर रखना है जहाँ सच्ची खुशियाँ मिल सकती हैं, तो हमें एक दूसरे की मदद की ज़रूरत है। जॉन वेस्ले की कक्षा की बैठकें इस दिशा में एक सराहनीय प्रयोग थीं, जिसमें समर्पित विश्वासियों के छोटे-छोटे समूह एक साथ आए, जिन्होंने एक दूसरे को उन प्रतिबद्धताओं के प्रति सच्चे रहने में मदद की जो उन्होंने खुद के लिए निर्धारित की थीं, एक दूसरे को प्रोत्साहित किया कि वे ईश्वर की आज्ञाओं से प्रेम करें और ईश्वर द्वारा दिए गए वादों की इच्छा करें, चाहे वे सभी सांसारिक विकर्षण हों या अक्सर बाहरी लोगों की आलोचना के बीच। कई चर्चों में छोटे समूह मंत्रालयों या पैराचर्च मंत्रालयों के साथ मिलकर गठित जवाबदेही समूहों का उद्भव, कई मायनों में, ठीक उसी तरह का समर्थन, ध्यान और सहायता प्रदान करता है जिसे इब्रानियों के लेखक ने हमारी दौड़ को पूरा करने के लिए एक आवश्यकता के रूप में हमारे सामने रखा है।

यह भी एक तरीका है जिससे आतिथ्य का अभ्यास हमारे चर्चों में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बनी हुई है क्योंकि हम अपने घरों को आध्यात्मिक विकास और समर्थन के लिए और मिशन और आउटरीच के लिए आधार के रूप में खोलते हैं। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे प्रत्येक पैरिशियन कठिनाई, प्रलोभन या सिर्फ साधारण व्याकुलता के बीच ईश्वर को थामे रखने की दूसरे की क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। कई ईसाई अपने जीवन में ईश्वर के हाथ के निशानों के बारे में बोलने में धीमे हैं, लेकिन हम में से प्रत्येक में, ईश्वर ने ईश्वर की भलाई, विश्वसनीयता और निर्भरता की गवाही लिखी है।

यह गवाही सिर्फ व्यक्ति के लाभ के लिए नहीं लिखी गई है, बल्कि दूसरों के प्रोत्साहन के लिए भी लिखी गई है। हम अपनी मंडलियों को कैसे चुनौती दे सकते हैं कि वे ऐसा माहौल बनाएं जो हमारे बीच परमेश्वर के अनुग्रह के उन अंशों पर चिंतन और उन्हें साझा करने को प्रोत्साहित करे? और हमें उन्हें आगे बढ़ने के लिए चुनौती देने की चुनौती दी जाती है, पाप की भ्रामक और हमेशा मौजूद आवाज़ का प्रतिकार करने के लिए काम करना। बहकाए जाने की समस्या यह है कि हम अपने तरीके से वापस स्पष्ट सोच की ओर नहीं बढ़ सकते।

हमारे जीवन में किसी समय हमें किसी बहन या भाई की आवश्यकता होगी जो हमें पाप को उसके वास्तविक रूप में देखने में सहायता करे, और इसलिए हमें एक दूसरे को भी यह उपहार देने के लिए कहा जाता है। जब कोई बहन या भाई पाप के अस्थायी आनंद के लिए अपने जीवन की अखंडता और अनन्त पुरस्कारों को त्यागने के खतरे में होता है, तो हम उस बहन या भाई को उसकी दृष्टि को पुनः प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमें भी अपने जीवन में किसी समय ऐसी सहायता की आवश्यकता होगी। इब्रानियों के उपदेशक हमारा ध्यान उन बहनों और भाइयों की ओर आकर्षित करते हैं जिन्हें समाज ने सबसे अधिक विचलित के रूप में लक्षित किया है।

यह विशेष रूप से 10, श्लोक 32 से 34, और अध्याय 13, श्लोक 3 में सामने आता है। केवल वह मण्डली जो ऐसी परिस्थितियों में भाई-बहन के प्यार, संसाधनों और प्रार्थना के साथ अपने सदस्यों का समर्थन करने के लिए तैयार है, अपने अनुयायियों की वफादारी और विश्वास को बनाए रख सकती है और दिखा सकती है कि समाज की राय की अदालत, आखिरकार, किसी के मूल्य का अंतिम निर्णय नहीं है। यह चुनौती नई तात्कालिकता और अर्थ लेती है क्योंकि पश्चिमी चर्च दुनिया भर में हमारे बहनों और भाइयों की ज़रूरतों के बारे में जागरूक हो जाते हैं, खासकर उन देशों में जहाँ ईसाई धर्म एक प्रतिबंधित धर्म है, और जैसे-जैसे उन्हें प्रोत्साहित करने और उनका समर्थन करने के लिए हमारे पास साधन बढ़ते हैं। जैसे-जैसे हम इतने सारे क्षेत्रों में वैश्विक रूप से सोचने लगते हैं, वैसे-वैसे चर्च और ईश्वर के परिवार की हमारी परिभाषा भी बढ़ने की ज़रूरत है।

इस क्षेत्र में कुछ कदम सीधे-सादे हैं। दूसरे देशों में हमारे ईसाई बहनों और भाइयों की दुर्दशा के बारे में जानने के लिए समय निकालें। अपने देश में चुप्पी को तोड़ें।

धार्मिक उत्पीड़न के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाएँ। प्रार्थना करें। सताए गए ईसाइयों और शहीदों द्वारा छोड़े गए परिवारों की सहायता को अपने मण्डली के मिशन और राहत कार्य का हिस्सा बनाएँ।

तीन दशक पहले, एशलैंड थियोलॉजिकल सेमिनरी में मेरी एक पूर्व सहकर्मी ने नाइजीरिया में एक मिशनरी के साथ नियमित व्यक्तिगत संपर्क के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया, जो ज्यादातर ईमेल के माध्यम से संवाद करती थी। इस तरह, वह एक ऐसे क्षेत्र में एक मंत्री के लिए एक संसाधन व्यक्ति के रूप में सेवा करने में सक्षम थी जहाँ ईसाई धर्म में धर्मांतरित लोगों को क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा था। वह उन धर्मांतरित लोगों की ज़रूरतों के लिए विशेष रूप से प्रार्थना करने में सक्षम थी, इस मंत्री को प्रोत्साहित करने के लिए, और जब भी सार्वजनिक आवाज़ या बाहर से भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती थी, तो विशिष्ट ज़रूरतों को सुनने और उन ज़रूरतों को पूरा करने के प्रयासों का समन्वय करने के लिए उपलब्ध थी।

इन तरीकों से कोई भी ईसाई दुनिया में ईसाइयों के उत्पीड़न को खत्म नहीं कर सकता, लेकिन अगर हमारी प्रत्येक मण्डली दुनिया में कहीं भी उत्पीड़न का सामना कर रहे एक भी ईसाई समुदाय की मदद करने के लिए प्रतिबद्ध हो, चाहे वह मिशनरी के माध्यम से हो, उस समुदाय से संपर्क के माध्यम से हो, उदाहरण के लिए, घर लौटने वाले किसी अंतरराष्ट्रीय छात्र के माध्यम से हो, तो एक जबरदस्त पहला कदम उठाया जाएगा। इब्रानियों के लेखक ने महसूस किया कि लोग

अपने संसाधनों के अनुसार जोखिम लेंगे। यदि एक व्यक्तिगत ईसाई जानता है कि चर्च के अन्य सदस्य उसकी भलाई की तलाश करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं, तो क्या वह विश्वासी ईमानदारी और खुलेपन के स्तर को जोखिम में नहीं डाल पाएगा जो गहन व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास को होने देता है? और यह जानते हुए कि विश्वासियों के एक पूरे समूह के संसाधन उसके पीछे खड़े हैं, वह किन महत्वपूर्ण मंत्रालयों का नेतृत्व करने में सक्षम हो सकता है? विश्वास के नाम पर कौन सी साहसिक पहल।

जब हम अपने सामने रखी दौड़ में भाग लेते हैं, तो हम दूसरे विश्वासियों के साथ प्रतिस्पर्धा में नहीं भागते। हम दूसरों की गलियों से अलग अपनी छोटी-छोटी गलियों में नहीं दौड़ते। हम एक साथ दौड़ते हैं, हाथ में हाथ डाले, ठोकर खाने वालों को उठाने के लिए झुकते हैं, जब हम ठोकर खाते हैं तो एक-दूसरे की ओर हाथ बढ़ाते हैं, घायलों को सहारा देते हैं, एक-दूसरे के कंधों पर हाथ रखते हैं।

इस दौड़ में, खेल के मास्टर की यही इच्छा होती है कि जो भी दौड़ शुरू करेगा, वह अच्छी तरह से समाप्त करेगा।